महिला अध्ययन क्या है ?

सातवां राष्ट्रीय महिला अध्ययन सम्मेलन, 27 से 30 दिसम्बर, 1995, जयपुर.

महिला अध्ययन क्या है

महिला अध्ययन के विभिन्न आयामों से सम्बन्धित कुछ प्रश्नों के माध्यम से
महिला अध्ययन की प्रकृति तथा महत्व, उद्‌भव तथा विकास को समझने का प्रयास

प्रकाशक : सम्मेलन आयोजन समिति, जयपुर

मूल आलेख : नीरा देसाई, मैत्रेयी कृष्णराज

हिन्दी रूपान्तर : आरती साह, अञ्जू ढड्ढा मिश्र

प्रस्तुति : अञ्जू ढड्ढा मिश्र

कम्प्यूटर कम्पोजिंग : चारू कम्प्यूटर्स, जयपुर

मुद्रक : कमला आर्ट प्रिंटर्स, जयपुर।

अनुक्रम

महिला अध्ययन है क्या
पृष्ठ 1

महिला अध्ययन : सूत्रपात एवं विकास
पृष्ठ 2

महिला अध्ययन की विशिष्टता
पृष्ठ 4

महिला अध्ययन की पृष्ठभूमि
पृष्ठ 6

महिला अध्येता
पृष्ठ 7

महिला अध्ययन और महिलावाद
पृष्ठ 8

समस्या : समीक्षा : समाधान : सिद्धान्त
पृष्ठ 10

महिला अध्ययन का प्रयोजन
पृष्ठ 12

महिला अध्ययन की उपलब्धि
पृष्ठ 13

महिला अध्ययन क्या है

महिला अध्ययन की प्रकृति तथा महत्व, उद्‌भव तथा विकास को समझने की चेष्टा हम महिला अध्ययन के विभिन्न आयामों से सम्बन्धित कुछ प्रश्नों की चर्चा के माध्यम से करेंगे।

महिला अध्ययन है क्या ?

आज सारे विश्व में महिला अध्ययन की चर्चा है। जयपुर में 27 से 30 दिसम्बर तक इस विषय पर एक सम्मेलन का आयोजन भी किया जा रहा है। सरलतम रूप में इसका अर्थ है, महिला का अध्ययन। महिला केन्द्रित अध्ययन पद्धति या प्रणाली जो समाज में स्त्री के स्थान, उसकी समस्याओं, शिक्षा तथा स्वास्थ्य की उसकी आवश्यकताओं, आर्थिक तथा राजनीतिक भागीदारी में समानता के लिये उसके संघर्ष, उसके तनावों तथा परेशानियों का विस्तृत अध्ययन करे। तथापि हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये कि यह केवल कक्षा में पढ़े जाने वाला विषय न हो कर समाज में व्याप्त लिंगभेद की विषमताओं को मिटा कर स्त्रियों व पुरुषों के अन्तःसम्बन्धों की एक बेहतर समझ विकसित करे जो एक अधिक सामन्जस्यपूर्ण समाज के निर्माण में सहायक हो। महिला अध्ययन शिक्षा के उन गिने-चुने विषयों में से है जिनमें ज्ञान एवं कर्म के बीच निकट का सम्बन्ध बनाये रखने का विशेष प्रयास किया जाता है जिससे शोध तथा आन्दोलन के नकली द्वैत; जिसमें एक वर्ग अध्ययन तथा दूसरा वर्ग आन्दोलन में सक्रिय रहता है, मिटाया जा सके। इस प्रकार महिला अध्ययन तथा महिला आन्दोलन के बीच एक सक्रिय तथा सतत् सम्बन्ध बना रहता है।

महिला अध्ययन : सूत्रपात एवं विकास

महिला अध्ययन के उद्‌भव को लेकर अनेक प्रश्न है। महिला केन्द्रित अध्ययन हमारे देश तक ही सीमित नहीं है, अपितु सारे विश्व में देखा जा सकता है। इसमें पहल पश्चिम, विशेषत: अमरीका में हुई थी, तथा वहीं से ही यह विषय विकासशील देशों में भी पहुँचा। पश्चिम में यद्यपि इसमें काफी समरूपता है विकासशील देशों में इसकी प्रकृति, परिकल्पना एवं ध्येय काफी भिन्न हैं।

कई दशाब्दियों तक, शिक्षा प्रणाली के विभिन्न विषयों में मुद्दों, घटनाओं व स्थितियों को महिला की दृष्टि से देखने की आवश्यकता पर ध्यान नहीं दिया गया। सत्तर के दशक में महिलाओं से जुड़े मुद्दे प्रमुखता प्राप्त कर रहे थे। जब भी कोई सामाजिक समस्या अधिक बढ़ जाती है, तो उसका व्यवस्थित विश्लेषण आवश्यक हो जाता है। जब गरीबी की समस्या बहुत बढ़ गई थी तो अर्थशास्त्रियों को उसकी जड़ों तथा उसके विभिन्न आयामों का अध्ययन करना आवश्यक हो गया, उसके उन्मूलन के तरीके ढूँढे गये। हिंसा तथा पर्यावरण के क्षेत्र में भी ऐसा ही हुआ। पश्चिम के देशों में साठ के दशक में रोज़गार, पदोन्नति, शिक्षा, न्याय तथा राजनीतिक क्षेत्रों के उच्च पदों तक स्त्रियों की पहुँच, आदि क्षेत्रों में लिंग भेद की समस्या अत्यधिक जटिल हो गई। विवाहित जीवन में भी स्त्रियों ने स्वयं को दलित एवं शोषित पाया। संचार माध्यमों के लिये वे एक बिकाऊ वस्तु थीं, और वे उनका एक भोग की वस्तु के रूप में शोषण कर रहे थे। महिला आन्दोलन ने लिंग भेद के विरुद्ध, लैंगिकन्याय, समता, गरिमा, उत्पीड़न एवं हिंसा का विरोध, आदि कई महत्वपूर्ण प्रश्न उठाये, तथा साथ ही यह पाया कि कई और प्रश्नों जैसे लिंग भेद की जड़ों, समाज में स्त्री की स्थिति, उसकी सामर्थ्यहीनता, पितृसत्ता तथा उसकी स्थिति का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, कुछ ऐसे विषय थे जिनमें व्यवस्थित विश्लेषण की आवश्यकता को पहचाना गया।

भारत में समाज में महिला की स्थिति के अध्ययन के लिये सन 1972 में एक राष्ट्रीय समिति का गठन हुआ, जिसने सन 1974 में अपनी रिपोर्ट समता की ओर प्रस्तुत करी, जिसमें स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, राजनीतिक भागीदारी, आदि सभी क्षेत्रों में महिला की दुर्दशा के चौंकाने वाले तथ्य सामने आये। स्वतन्त्रता के बाद से स्त्रियों को जब संविधान प्रदत्त समता प्राप्त थी, यह माना गया था कि उसे बस लागू करने की आवश्यकता थी, परन्तु समिति की रिपोर्ट ने इस सन्तुष्टि को जड़ से हिला

दिया तथा महिला के गिरते सामाजिक स्तर के प्रति चिन्ता जागी। एक प्रमुख शोध संस्थान ICSSR ने निर्धन तबके की स्त्रियों की सामाजिक स्थिति पर शोध में पहल की क्योंकि अब तक का सभी अध्ययन मध्यमवर्गीय स्त्रियों पर केन्द्रित था। एस. एन .डी. टी. विश्वविद्यालय, जो कि सन् 1985 तक भारत का एक मात्र महिला विश्वविद्यालय था, ने, 1974 में महिला की असमान सामाजिक स्थिति के व्यवस्थिति विश्लेषण के उद्देश्य से महिला अध्ययन केन्द्र का गठन कर लिया था। साथ ही इसी समय में वामपंथी गुटों द्वारा कई जन-आन्दोलन चलाये गये। यद्यपि इन्होंने महिलाओं के प्रश्न कभी-कभी ही उठाये, लेकिन मथुरा नाम की एक आदिवासी महिला के साथ पुलिस हिरासत में हुए बलात्कार (जो मथुरा रेप केस के नाम से जाना जाता है) के बाद से महिलाओं के स्वायत्त समूह संगठित हुए, और महिला आन्दोलन नजर आने लगा। इस प्रकार ये दोनों प्रक्रियाएं साथ-साथ चल रही थीं, जहाँ एक ओर महिला की दुर्दशा की वास्तविक स्थिति से पैदा हुई चिन्ता ने व्यवस्थित विश्लेषण की आवश्यकता को जन्म दिया था, वहीं दूसरी ओर महिलाओं की प्रति हुई हिंसा और शोषण का विरोध महिला आन्दोलन के रूप में मुखरित हुआ था। सत्तर के दशक के अन्त तक बलात्कार, दहेज हत्यायें, घरेलू हिंसा, महिला स्वास्थ्य, संचार माध्यमों में उनका विकृत चित्रण, महिला समूहों की चिन्ता के मुख्य विषय बन गये थे तथा उन्होंने इनके विरोध में जुलूस, धरनों तथा प्रदर्शनों की शुरूआत कर दी थी। साथ ही सरकार पर वैधानिक तथा नीतिगत बदलाव के लिये दबाव डालना भी शुरू कर दिया था। भारतीय महिला अध्ययन संगठन का सूत्रपात अप्रैल, 1981 में बम्बई में आयोजित महिला अध्ययन के राष्ट्रीय सम्मेलन में हुआ। महिला अध्ययन संगठन तथा कुछ स्वायत्त महिला अध्ययन केन्द्रों के दबाव से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने 1986 में कुछ विश्वविद्यालयों एवं कुछ चुनिन्दा महाविद्यालयों में महिला अध्ययन केन्द्रों तथा प्रकोष्ठों की स्थापना के लिये दिशा-निर्देश जारी किये। आज सारे भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में पच्चीस से अधिक महिला अध्ययन केन्द्र स्थित है।

इस प्रकार शिक्षा तथा महिला आन्दोलन दोनों ने महिला अध्ययन की आवश्यकता को पहचाना। महिला की स्थिति को संवेदनशीलता से समझने तथा उसे बदलने का संकल्प एक ऐसी चुनौती है जिसे शोधकर्ता तथा चेतनाकर्मी दोनों समान रूप से पहचानते हैं।

महिला अध्ययन की विशिष्टता

महिला अध्ययन की विशेषता क्या है? क्या यह अर्थशास्त्र या समाज शास्त्री की ही तरह का एक और विषय ही नहीं है?

इस प्रश्न का उत्तर हाँ और ना दोनों हो सकता है। महिला अध्ययन, अध्ययन का एक विशिष्ट विषय भी है, साथ ही इसका समन्वयन अध्ययन के अन्य विषयों में भी किया गया है। उदाहरण के साथ इसे देखें। जैसे समाजशास्त्र, समाज के गठन का अध्ययन करता है; परिवार, जाति, धर्म आदि सामाजिक संस्थाओं के प्रयोजन तथा योगदान का अध्ययन करता है। वह समाज में महिला की स्थिति का अध्ययन भी करता है। बालकों के, विभिन्न अभिवृत्तियों तथा कार्यभागों में, संस्कारित किये जाने की प्रक्रिया तथा समाजीकरण, सामाजिक बदलाव का वृहत्तर समाज में महिलाओं की भागीदारी में योगदान आदि का अध्ययन भी करता है किन्तु महिला अध्ययन इससे कुछ अलग और कुछ अधिक है। महिला अध्ययन स्त्री होने के नाते स्त्री के विभिन्न रूपों यथा पुत्री, पत्नी, माता तथा व्यक्ति रूप में महिला केन्द्रित अध्ययन है। सामाजिक स्थिति के परिवर्तन से उसे कैसे दबाव अथवा तनाव झेलने पड़ते हैं जैसे, जब लड़की अपने पैतृक घर को छोड़कर पति के घर जाती है तो उसकी व्यवस्थापन प्रक्रिया क्या होती है। महिला अध्ययन सदैव ही स्त्रियों के प्रति भेदभाव के विरुद्ध प्रश्न उठाता है। क्यों लड़कियों को संतुलित भोजन, समुचित शिक्षा, स्वेच्छा तथा स्वाधीनता प्राप्त नहीं है। क्यों छोटी-छोटी बातों से बालिकाओं को बताया जाता है कि पैतृक घर में उसका स्थान थोड़े समय का ही है।

या यदि कामकाजी स्त्रियों की बात करें— अथशास्त्री कार्य, उत्पादन, श्रम आदि की बात करते हें। एक लम्बे समय तक अर्थशास्त्रियों ने महिला श्रमिक को अलग कोटि के रूप में स्वीकार ही नहीं किया। दूसरे एक लम्बे अर्से तक गृह कार्य; जिसमें कि घर से जुड़ी रोज़मर्रा क्रियाएं जैसे— खाना बनाना, बच्चे पालना, सफाई, धुलाई आदि ही नहीं, मवेशी की देखभाल तथा खेत खलिहानों में

मदद तथा कामगारों के भोजन आदि की व्यवस्था तक को उन्होंने उत्पादक श्रम के रूप में नहीं स्वीकार किया क्योंकि इसकी कोई कीमत नहीं थी। भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश तथा अफ्रीका जैसे प्रगतिशील देशों में ऐसे कई कार्य हैं जो कि स्त्रियों द्वारा किये जाते हैं, समय तथा श्रम का उपयोग करते हैं, किन्तु इनके लिए कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। ये अर्थशास्त्रियों की उत्पादक श्रम की परिभाषा में नहीं आते।

महिला अध्ययन ने इस प्रकार के कई उपेक्षित क्षेत्रों को न केवल इसलिए पहचाना और परिभाषित किया है कि ये उपेक्षित रहे हैं, बल्कि इसलिए भी कि हमारा मानना है कि इनके बिना वास्तविक स्थिति की सही तस्वीर स्पष्ट नहीं हो सकती। स्पष्ट है कि महिला अध्ययन स्त्री के दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है। यह प्रश्न उठ सकता है कि क्या महिला का दृष्टिकोण पुरुष से भिन्न है। आज की स्थिति में इस का उत्तर है, हाँ। अब तक का अधिकतर अध्ययन पुरुष को केन्द्र में रखकर हुआ है, उनकी दृष्टि से हुआ है तथा पुरुषों के विचार, भावनाओं तथा कार्यों पर केन्द्रित है। स्त्रियाँ पारिवारिक सम्बन्धों को कल्याणकारी तथा पारिवारिक जीवन को शान्त एवं तनाव-मुक्त नहीं पाती। स्त्री के दृष्टिकोण से ही हम जान पाये हैं कि परिवार में भी सत्तात्मक ढाँचे हैं, परिवार में पुरुषों का वर्चस्व है, पति-पत्नी सम्बन्ध तनावपूर्ण हैं, तथा पति का स्वर प्रधान रहता है। इस बात के अनेकों उदाहरण दिये जा सकते हैं कि यर्थात् को समझने के महिला अनुभव तथा महिलावादी दृष्टिकोण को अपनाते ही परिदृष्य, दृष्टिकोण, समस्याओं और स्थितियों की समझ में कितना अन्तर आ जाता है।

इस प्रकार महिला अध्ययन न केवल प्रत्येक दूसरे अध्ययन विषय में समवेशित किया जा सकता है बल्कि विभिन्न विषयों के अध्ययन से उपार्जित महिला विषयक ज्ञान को केन्द्रित व संगठित करने के लिए पृथक महिला अध्ययन की भी आवश्यकता है।

महिला अध्ययन की पृष्ठभूमि

क्या महिलाओं पर पहले अध्ययन नहीं हुआ है?

हुआ है। परन्तु हमेशा पुरुषों द्वारा और उनके दृष्टिकोण से। कभी-कभी महिलाएँ भी लिखती थीं परन्तु वे भी प्रचलित विचारों को ही प्रतिबिम्बित करती थीं, केवल कुछ अपवादों के सिवाय। इन अपवादों को खोजा जा रहा है जैसे— साध्वियाँ और उनकी कविताएं। अभी-अभी सूज़ी थारू और के. ललिता ने सन् 2000 ईसा पूर्व से आधुनिक समय तक सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं से महिला लेखन के दो संस्करणों को संग्रहित किया है, यह पहले संकलित नहीं थी। महिलाओं का चित्रण विभिन्न क्षेत्रों जैसे कला, साहित्य, दर्शन, धर्म आदि में हुआ तो है किन्तु पूर्वाग्रह, भेदभाव और तोड़-मरोड़ के साथ। ज्यादातर लोग उन्हें सिर्फ शरीर के रूप में देखते थे और कुछ उन्हें प्रलोभन समझते थे। दर्शन और धर्म में उन्हें पुरुष की मोक्ष प्राप्ति की राह में बाधा माना गया है। यहाँ तक कि लोकोक्तियाँ और लोग-गीत और कहानियों में भी उन्हें समान क्षमताएँ व समान दर्जा नहीं दिया जाता था। इतिहास केवल युद्ध का व्याख्यान थे और महिलाएँ यदि थीं भी तो सिर्फ रानियाँ। हर क्षेत्र में पुरुषों का प्रभुत्व था। यहाँ तक कि विद्याओं में भी यही पूर्वाग्रह थे। यह माना जाता था कि पुरुषों में महिलाएं अपने आप शामिल हैं। ज्ञान का सृजन केवल पुरुषों द्वारा होता था क्योंकि महिलाओं को ऐसा कोई अधिकार नहीं था। जो जानकारी महिलाओं को थी उसका कोई महत्व नहीं था।

महिला अध्येता

महिला अध्ययन कौन कर रहा है?

प्रमुखत: महिलाएँ। महिलाओं ने इसे प्रारम्भ किया है और विषय भी उनके बारे में है, इसीलिए इसमें उनकी विशेष रुचि है और इसमें उनका काफी कुछ दाव पर लगा है। इसका यह मतलब नहीं है कि पुरुष यह कर नहीं सकते या उन्होंने किया नहीं है। हमारे कई समाज सुधारक पुरुष थे। ऐसे कई पुरुष विद्वान हैं जिन्होंने महिलाओं के विषयों को समझने में योगदान दिया है, जो महिलाओं के विषयों के प्रति सहानुभूति रखते हैं। महिला अध्ययन विश्वविद्यालयों के विभागों, महाविद्यालयों और विद्यालयों में, शिक्षण और शोध के द्वारा किया जाता रहा है। शिक्षा व्यवस्था के अलावा भी कुछ व्यक्ति और संस्थाएं हैं, जैसे– शोध संस्थाएं और स्वैच्छिक संगठन। महिला अध्ययन में न केवल शैक्षिक लेखन अपितु कोई भी प्रदर्शन चाहे शब्दों में, तस्वीरों में, संचार साधनों द्वारा भी, सम्मिलित हो सकता है अगर यह महिला के जीवन को महिला के दृष्टिकोण से प्रदर्शित करता है। इसका मापदण्ड केवल यह है कि क्या वह महिला की स्थिति पर रोशनी डालता है। उसके बारे में एक नई दृष्टि देता है, उसके प्रति एक संवेदनशील उत्कण्ठा जागृत करता है, उसके प्रति संवेदनशील है।

महिला अध्ययन और महिलावाद

क्या महिला अध्ययन से जुड़े सभी लोग महिलावादी हैं?

इस प्रश्न का आदर्श उत्तर होता 'हाँ'। किन्तु वस्तुस्थिति ऐसी नहीं है। जैसा कि अब आप समझ गये होंगे महिला अध्ययन कई प्रकार के लोगों द्वारा किया जा रहा है। उदाहरणार्थ उन शिक्षकों को लें जो विश्वविद्यालयों में अध्यापन अथवा शोध करते हैं। वे इसे अन्य विषयों की तरह मात्र एक विषय के रूप में पढ़ा रहे हो सकते हैं। शायद इनमें से कुछ स्वयं को महिलावादी कहलाना पसन्द न करें।

महिला अध्ययन एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें समाज में महिलाओं के दमन और दोयम दर्ज़ा दिये जाने की व्याख्या करने के लिए संवेदनशीलता व सिद्धान्त दोनों ही जरूरी हैं अत: हमें महिलावादी दृष्टिकोण अपनाना होगा। निस्सन्देह महिलावाद की कोई एक किस्म नहीं है किन्तु दमन के मूल कारणों की भिन्न-भिन्न व्याख्याएं हैं। इसे हम और स्पष्ट रूप में देखें।

आपने उदार महिलावाद के बारे में सुना होगा। प्राय: स्वतंत्रता पूर्व के महिला आन्दोलन का वर्णन करते समय हम कहते हैं कि वह एक उदार महिलावादी नज़रिया था। वे मानते थे कि महिलाएं तर्कशील/चिन्तनशील प्राणी हैं और उन्हें पुरुषों के समान नागरिक अधिकार मिलने चाहिए। उन्हें शिक्षा के समान अवसर मिलने चाहिए और राजनीतिक प्रक्रियाओं में उनकी भागीदारी होनी चाहिए। ऐसा माना जाता था कि कानूनी सुधार व परिवर्तन के लिए दबाव द्वारा समानता प्राप्त की जा सकती है।

एक महत्वपूर्ण, किन्तु संचार माध्यमों द्वारा विकृत, नजरिया है आमूल परिवर्तनवादी महिलावाद। इनकी प्रमुख मान्यता है कि दमन का मूल कारण है जैविक परिवार, समाज का सत्तात्मक लैंगिक विभाजन व लैंगिक भूमिकाएं। वे मानते हैं कि जैविक असमानताओं का प्रयोग पुरुषों व महिलाओं के बीच कार्य व सत्ता विभाजन के लिए किया जाता है। पितृसत्ता, कामेच्छा पर पुरुष नियंत्रण के रूप में व्यक्त लैंगिक दमन का मूल कारण है। लैंगिक राजनीति पितृ सत्ता की राजनीति है। लैंगिक

चुनाव, शरीर पर नियंत्रण, सामुहिक शिशु पालन कुछ ऐसे तरीके हैं जिनसे पुरुष प्रभुता को सीमित किया जा सकता है। असमान सामाजिक सम्बन्धों के लिए पुरुषों को जिम्मेदार ठहराते हुए वे महिला संगठनात्मकता व आत्म-सहायता की युक्ति प्रतिपादित करते हैं।

तीसरा महत्वपूर्ण दृष्टिकोण है समाजवादी महिलावाद का। महिलाओं के दोयंम दर्ज़े का मूल कारण निजी सम्पत्ति व वर्ग-विभाजित समाज में है। परिवार जैसी संस्थाएं महिलाओं के निम्न स्थान को बनाये रखती है। सत्ता, लिंग से ही नहीं, वर्ग से भी प्राप्त होती है तथा पितृ सत्ता व वर्ग सम्बन्धों में प्रतिबिम्बित होती है। अत: समाज में लैंगिक व्यवस्था के चलन को वर्ग ढाँचे के भीतर समझना आवश्यक है। समाजवादी महिलावादियों की नजर में महिलाओं की सत्ताहीनता, शक्तिहीनता— उत्पादन, प्रजनन, कामेच्छा तथा बच्चों के समाजीकरण पर आधारित है। महिला समूहों को महिलाओं के मुद्दों पर अपना ध्यान केन्द्रित करना है किन्तु उन्हें समाज के अन्य पीड़ित समूहों के संघर्षों से भी स्वयं को जोड़ना होगा।

महिलावाद के अन्य प्रकार भी हैं, किन्तु हमें उनमें जाने की आवश्यकता नहीं है। यह स्मरण रखना जरूरी है कि किसी अन्य विषय की भाँति स्थिति की व्याख्या के लिए एक दृष्टिकोण होना अत्यन्त आवश्यक है। महिलावादी सिद्धान्त हमें महिला समस्याओं के कारणों को समझने में सहायक होते हैं।

समस्या : समीक्षा : समाधान : सिद्धान्त

समस्या की समीक्षा की आवश्यकता को स्वीकार भी लें तो यह समस्या के समाधान में कैसे सहायक है? क्या समाधान सिद्धान्त से अधिक आवश्यक नहीं है?

हमारा मानना है कि ये परस्पर सम्बन्धित हैं। बहुधा जब हम किसी सामाजिक समस्या से सम्बोधित होते हैं तो हम सिद्धान्त को गौण मानते हुए उसके समाधान को अधिक महत्व देते हैं। जैसे कि महिला अध्ययन के कई आलोचकों का मानना है कि दहेज प्रथा की समीक्षा या अध्ययन की क्या आवश्यकता है— दहेज उन्मूलन् पर ध्यान दिया जाना चाहिए। या कि बलात्कार के आँकड़े इकट्ठे करने से अच्छा है, अपनी ऊर्जा बलात्कारी स्थिति से संघर्ष के लिए संभाल कर रखें।

इन शंकाओं का समाधान कई तरीकों से किया जा सकता है। पहली बात तो यह है कि सिद्धान्त और व्यवहार में कोई विरोधाभास नहीं है। दोनों में अन्तर-सम्बन्ध है। जब तक हम यह न जानें कि लड़कियों के सम्पत्ति अधिकार क्यों सुरक्षित नहीं है, इन स्थितियों में विवाह करने पर वे क्यों बाध्य हैं, उनकी सामाजिक स्थिति इतनी कमजोर क्यों है, हम न तो दहेज-प्रथा की पेचीदगियों को ही पहचान पाएँगे, न उनके विरुद्ध संघर्ष कर पाएँगे, न ही उन विभिन्न रूपों को पहचान पाएँगे जो यह धर लेती हैं। शुरूआत में यह सोचा गया था कि दहेज के विरुद्ध कठोर कानून बनाने से हम इस प्रथा को रोक पाएंगे या धरने, प्रदर्शन आदि से हम लोगों को इस अपराध से रोक पाएंगे परन्तु ऐसा नहीं हो पाया है क्योंकि यह कोई इक्का-दुक्का प्रकरण नहीं है, अपितु आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों तथा कई और कारणों से जुड़ा हुआ है।

आन्दोलन का एक और पहलू यह है कि आन्दोलन का अर्थ हमेशा सड़क पर निकल आना तथा धरने और मोर्चे निकालना ही माना जाता है। हमारा मानना है कि लोगों को संवेदनशील बनाना, मुद्दों के प्रति चेतना जागृत करना, युवा पीढ़ी का आव्हान न केवल संवेदना के स्तर पर करना अपितु

उन्हें व्यवस्थित रूप से स्त्रियों के दमन के बारे में समझा पाना भी आन्दोलन का ही एक रूप है। यदि बालिकाओं को संतुलित भोजन न मिल पाने से हुई तकलीफों का वैज्ञानिक अध्ययन छात्रों को बेहतर अभिभावक बनाता है, जो अपने बच्चों के लालन-पालन में इसका ध्यान रखें तो यह भी आन्दोलन ही है। इसी प्रकार आर्थिक क्षेत्र में स्त्री के योगदान को पहचानने के लिए मानसिकता तैयार करने के पहले घरेलू कार्य के विभिन्न पहलुओं को समझना आवश्यक है। महिलावादियों के वर्षों के प्रयासों के कारण ही आज उन कार्यों, जिनमें पारिश्रमिक नहीं दिया जाता, को भी श्रम के रूप में स्वीकार किये जाने की दिशा में सेन्सस (जनगणना) में की गई परिभाषा में बदलाव आया है।

हम इस बात पर भी ध्यान आकर्षित करना चाहेंगे कि ऐसे और कई विषय हैं जो कि सामाजिक कुरीतियों का अध्ययन कर रहे हैं परन्तु उन पर कभी आन्दोलन संचालित करने का दबाव क्यों नहीं डाला जाता? समाजशास्त्री वर्षों से बाल अपराध, वैश्यावृत्ति, अपराध आदि की विवेचना कर रहे हैं परन्तु उन्हें कभी यह नहीं पूछा जाता कि वे इन कुरीतियों के उन्मूलन के लिए क्या कर रहे हैं। यही स्थिति अर्थशास्त्रियों की है— वे गरीबी का अध्ययन करते हैं, किन्तु गरीबी उन्मूलन की उनकी कोई बाध्यता नहीं है। फिर महिला अध्ययन पर ही यह बाध्यता क्यों। निश्चय ही सभी विषयों को सामाजिक बदलाव के लिए तत्पर रहना चाहिए। ज्ञान शक्ति है और स्त्री को भी अपनी स्थिति को समझने की शक्ति प्राप्त करनी चाहिए।

महिला अध्ययन का प्रयोजन

महिला अध्ययन द्वारा हम क्या करने का प्रयत्न करते हैं?

पिछले उत्तरों में हम इस विषय की ओर पहले ही इंगित कर चुके हैं किन्तु अधिक स्पष्टीकरण के लिए प्रथम, यह सामाजिक वास्तविकता को समीक्षात्मक रूप से उजागर करता है। यह उन विषयों का परीक्षण करता है जो कि पहले नहीं देखे गये या पहले कही गई बातों का पुनरावलोकन करता है। यह महिलाओं की समस्याओं एवं उनके योगदान की तरफ जनमानस का ध्यान आकर्षित करता है। यह इस तथ्य को भी उजागर करता है कि सामाजिक संस्थाएं— परिवार, शिक्षा, व्यवस्था, संचार, सांस्कृतिक प्रथाएं, सरकारी एवं अन्य जन-संस्थाएं, महिला को किस दृष्टि से देखती हैं, और उनके पूर्वाग्रहों को उजागर करता है। यह समाधान ढूँढ़ता है। यह विगत से उदाहरण सीखकर भविष्य एवं वर्तमान को संवारता है। महिला अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य यही है कि महिलाओं की स्थिति को सुधारा जाये, ताकि पुरुष और महिलाएं एक अधिक न्यायपूर्ण एवं समान समाज में जी सकें।

महिला अध्ययन की उपलब्धि

महिला अध्ययन से क्या हासिल हुआ है?

उत्तर— बहुत कुछ। इसने महिलाओं के मुद्दों को समाज में उजागर किया है। महिला अध्ययन एवं संवाद से सिद्ध हुआ है कि अधिकाधिक संख्या में महिलाएं "गायब" होती जा रही हैं। उनकी संख्या पुरुषों के अनुपात में कम होती जा रही है। इससे यह भी उजागर हुआ है कि महिला शिशुओं की उपेक्षा का प्रमुख कारण पुरुषों को प्रमुखता देना है। इससे विभिन्न क्षेत्रों में महिला श्रम के बारे में बहुत सारी जानकारी प्राप्त हुई है। इससे यह भी प्रदर्शित होता है कि कैसे महिला श्रमिक, उद्योगों और कृषि में कम वेतन पर मजदूरी करती हैं और निम्न कोटि के कार्य करती हैं, और फलस्वरूप हाशिए पर धकेली जा रही हैं। समाज उनके प्रति शिक्षा, प्रशिक्षण, तकनीकी शिक्षा आदि क्षेत्रों में उनके प्रति भेदभावपूर्ण व्यवहार रखता है। स्त्रियों के सम्पत्ति के अधिकार क्यों नहीं हैं, कानून में उनके विरुद्ध कैसे भेदभाव हैं, क्यों स्त्रियों का स्वास्थ्य कमजोर है, परिवार कैसे सैंकड़ों संघर्षों का घर है, और ऐसी ही सैंकड़ों और समस्याएं महिला अध्ययन ने दर्शायी हैं। हम पहली बार समाज के विभिन्न हिस्सों की स्त्रियों के बारे में जान पा रहे हैं— भिन्न सामाजिक संस्कारों की स्त्रियों— दलित, गरीब, शोषित स्त्रियों, भारत के विभिन्न क्षेत्रों की स्त्रियों के बारे में जानकारी प्राप्त कर पा रहे हैं। उदाहरण के रूप में हम यह जानते हैं कि दक्षिण भारत में स्त्रियों की स्थिति उत्तर भारत से बेहतर है, कि जन-जातियों में स्त्रियों पर कम पाबन्दियाँ हैं, और उन्हें अधिक अधिकार प्राप्त हैं। स्त्रियों के प्रति हिंसा, दहेज, दहेज हत्याएं, बलात्कार, घरेलू हिंसा, यौन हिंसा आदि ऐसी कई समस्याओं के बारे में अब हमें जानकारी है जिनका होना भी पहले नहीं स्वीकार किया जाता था।

हमने विगत में स्त्रियों के योगदान के बारे में जाना है, इतिहास में उनके योगदान को पहचाना है, स्वाधीनता संग्राम में, कला में, शिल्पकला, साहित्य, संगीत, आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक क्षेत्रों में उनके योगदान को पहचाना है। तथा इन्हीं सटीक अध्ययनों की वजह से अब स्त्रियों के योगदान को समाज, सरकार तथा राजनीतिक पार्टियां किसी के द्वारा भी अनदेखा नहीं किया जा सकता। भारत तथा विदेशों में भी महिला आन्दोलनों से शक्ति प्राप्त कर महिला समूह, तथ्यों से लैस हो, अपनी शक्ति संगठित कर पाए हैं जिससे वे समाज एवं सरकारों पर दबाव बना सके हैं। विभिन्न स्तरों पर सरकारों तथा अन्य सामाजिक संस्थाओं पर कार्यवाही के लिए दबाव डाल सके हैं। कई महिला

अध्ययन विशेषज्ञ स्थिति में सुधार के लिए अलग अलग कमेटियों, योजना बोर्डों के सदस्य तथा बातचीत में भागीदार रहे हैं। वे विकास परियोजनाओं में भागीदारी करते हैं, तथा महिला आन्दोलन में शामिल हैं, किन्तु तब भी हमें एक लम्बा रास्ता अभी तय करना है।

केवल नये आँकड़े ही संकलित किये जाते हों ऐसा नहीं है कई पुराने सिद्धान्तों और विचारों में भी त्रुटियों को पहचान कर उन्हें गलत तथा पूर्वाग्रहपूर्ण घोषित किया गया है जैसे कि श्रम की परिभाषा जो कि केवल पारिश्रमिक के बदले किये गये कार्य को ही श्रम में सम्मिलित करती थी और ऐसी कई क्रियाएं जो उपभोग नहीं थीं, बल्कि संसाधन पैदा करती थीं इसमें सम्मिलित नहीं थीं; किस प्रकार महिला श्रमिक के पारिश्रमिक विहीन श्रम से उत्पादन संस्थान मालिक के लाभ में वृद्धि होती है। यदि स्त्रियाँ ये कार्य नहीं करतीं, तो पुरुषों को इन कार्यों के लिए पारिश्रमिक देना आवश्यक होता तथा पुरुषों को इन कार्यों के लिए अधिक पारिश्रमिक दिया जाता। हम यह जानते हैं कि पुरुष को परिवार का मुखिया माना जाना गलत है क्योंकि एक तिहाई परिवारों की मुखिया, स्त्रियाँ हैं। हम अध्ययन एवं शोध के नए तरीके खोज रहे हैं जैसे महिला श्रम को पहचानने के लिए पारिश्रमिक के स्थान पर समय का पैमाना, प्रश्नावली के स्थान पर भागीदारी करते हुए अध्ययन, आन्दोलन अध्ययन, ज्ञान-अर्जन के लिए नये स्त्रोतों की खोज— जैसे, वाचिक इतिहास, लोक परम्परायें, मुहावरें व लोकोक्तियाँ, डायरियाँ, संस्मरण आत्मकथाएँ आदि तथा परम्परागत परिपाटियों का पुनरावलोकन।

पोषाहार में हमेशा यह माना जाता था स्त्रियाँ शारीरिक श्रम कम करती हैं इसलिए इन्हें अधिक भोजन की आवश्यकता नहीं है, किन्तु ग्रामीण महिलाओं की दिनचर्या के कार्यों में वास्तविक ऊर्जा इस्तेमाल को मापने से पता चला कि पुरुषों की अपेक्षा उनका ऊर्जा व्यय अधिक है फिर भी सामाजिक मान्यताओं के चलते, वे पुरुषों से कम भोजन करती हैं। सामान्यत: अब इस बात के काफी आंकड़े उपलब्ध हैं कि किस प्रकार विकास ने महिलाओं का अधिक नुकसान किया है। महिला अध्ययन का सिद्धान्त पक्ष स्त्रियों को दोयम् दर्जा दिये जाने के कारणों की विवेचना करता है। कई विषयों, यथा समाज शास्त्र, नृतत्व शास्त्र, मनोविज्ञान में पारम्परिक सिद्धान्तों को चुनौती दी गई है। संचार माध्यमों के लिए विकल्प ढूँढे गये हैं। पाठ्य पुस्तकों से पूर्वाग्रह निकाल कर उनका परिष्कार करने के प्रयास किये गये हैं, लोगों को अधिक संवेदनशील बनाने के लिए प्रशिक्षण आयोजित किये गए हैं जिनमें पुरुष, नौकरशाही तथा समाज के विभिन्न तबकों में नारी के प्रति संवेदनशीलता जागृत करने के प्रयास हुए हैं, कानून में परिवर्तन सुझाये गये हैं— महिलाओं को अपने कानूनन हकों के प्रति सचेत किया गया है। महिलाएँ मिल कर संघर्ष करना सीख रही हैं, और अपना सहारा और समर्थन स्वयं जुटा रही हैं। **सरलतम रूप में कहा जा सकता है महिला अध्ययन का अर्थ है हमारे समाज का पुनर्निर्माण।**

महिला अध्ययन का भारतीय संगठन

महासचिव कार्यालय : कार्यालय नं. 4; भगवानदास रोड, नई दिल्ली - 110001

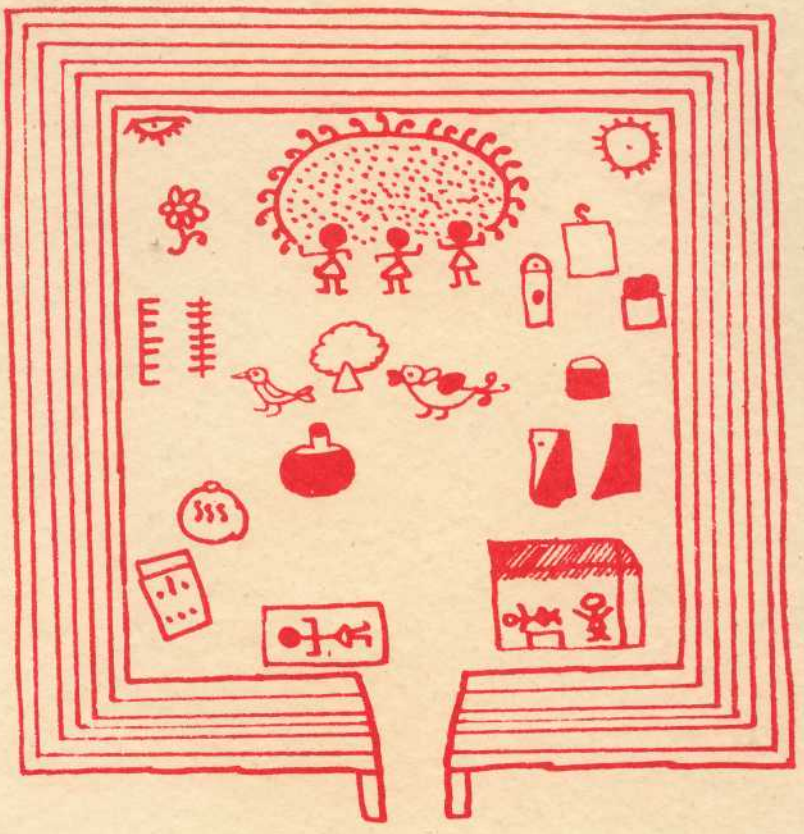

धींगा गणगौर का मांडणा

रचें खुद हम अपना ज्ञान
पुख़्ता हो अपनी पहचान

Rs 10/-